गोदान : मॉडल प्रश्नोतर

प्रश्न-1 : 'गोदान' में प्रेमचंद ने प्रो. मेहता-मिस मालती संवाद के जरिए स्त्री-पुरुष संबंधों की पड़ताल की है। विचार कीजिए।

उत्तर: प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में कई ऐसे प्रसंग आए हैं जहाँ प्रो. मेहता और मालती के बीच के संवादों के माध्यम से प्रेमचंद ने अपनी प्रेम और विवाह संबंधी अपनी वैचारिकता को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। मेहता और मालती 'गोदान' की शहरी कथा के प्रमुख चरित्र हैं। मालती आत्मविश्वास से भरी हुई चंचल प्रवृत्ति की युवती हैं, जबकि मेहता दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं। मेहता प्रेम को भावना नहीं बल्कि वस्तु के रूप में देखते हैं। वह प्रेम को अधिकारमूलक बताते हुए स्पष्ट रूप से कहते है 'प्रेम सीधी-सादी गऊ नहीं खूंखार शेर है।' वह प्रेम को प्राप्त करने के लिए हिंसा के प्रयोग को भी जायज ठहराते हैं।

मालती की प्रेम दृष्टि मेहता के प्रेम संबंधी विचारों के ठीक विपरीत है। वह छायावादी प्रेम की मान्यताओं के अनुरूप प्रेम को 'देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु' मानती है। उसके लिए प्रेम दैहिक जरूरत नहीं बल्कि हृदय की कोमल और पवित्र भावना है। वह मेहता की तरह प्रेम को अधिकार की नहीं बल्कि त्याग, समर्पण और उपासना को वस्तु समझती है । स्पष्ट है कि मेहता-मालती संवाद के माध्यम से प्रेमचंद छायावादी प्रेम के प्रति अपनी निष्ठा को स्थापित करते हैं तथा प्रेम के 'प्लेटोनिक' स्वरूप को अपना वैचारिक समर्थन प्रदान करते हैं।

जहाँ तक प्रोमेहता और मिस मालती के आपसी संबंधों का सवाल है तो यहाँ चित्रित उनका यह संबंध हजारों हजार वर्ष . पुरानी वैवाहिक संस्था पर प्रश्न चिह्न लगा देता है। यह एक नए तरह का संकेत करता है। वस्तुतः प्रेमचन्दअपने उपन्यास 'निर्मला' में विवाह के अतिमानवीय चेहरे को उद्घाटित कर चुके थे। गोदान में भी मिखन्ना और गोविन्दी के वैवाहिक संबंध के माध्यम से वे विवाह संस्था . के अमानवीय स्वरूप को ही सामने लाते हैं। प्रारंभिक वैवाहिक संबंध में कुछ अर्से बाद कोई गति अथवा हलचल नहीं रह जाती है और धीरेधीरे- इस संबंध के धागे कमजोर पड़ने लगते हैं। नारीमुक्ति आंदोलन से जुड़े चिंतकों ने यदि विवाह संस्था को जड़ से खत्म कर देने - की वकालत की है तो उसके पीछे यही कारण है।

वैसे, प्रेमचंद ने यहाँ जो विवाह का विकल्प रखा हैं वह उचित तो है किन्तु अपने समय के अनुकूल नहीं है। असल में, मिस मालती पश्चिमी से जो बौद्धिकता और जनतांत्रिक मूल्य लेकर आयी है वह उन्हें प्राकृतिक स्वतंत्रता के पक्ष में खड़ा करता है। वे जानती हैं कि मेहता अधिकारवादी हैं। मेहता कह चुके हैं कि प्रेम को वे एक सीधीसाधी गऊ नह-ीं मानते बल्कि खूंखार शेर मानते हैं। अतः उनके साथ विवाह संबंध बनते ही मालती की स्वतंत्रता चली जायेगी और वे इसे खोना नहीं चाहती। इसीलिए मिस मालती भी उनसे वैवाहिक संबंध नहीं चाहती। वस्तुतः यह वही समय है कि जब पश्चिम के देशों में विवाह के प्रति उदासीनता दिखने लगी थी। न्यूर्याक और फ्रांस जैसे शहरों में लोग लाइफ पार्टनर की जगह (Live-in Relation) की तरह रहने लगे वे तथा स्त्रीपुरुष के संबंधों को लेकर - पुरुष का एक नया संबंध था।-अब नैतिकता जैसी कोई बात नहीं रह गयी थी। यह बगैर किसी वैवाहिक औपचारिकता के स्त्री

प्रेमचन्द ने यह भी दिखाया है कि प्रेम जब यांत्रिक हो जाता है तब ऐसे संबंधों में रुढ़ियां जन्म लेने लगती हैं और फिर इसका परिणाम होता है संबंध का टूटना। प्रेमचन्द यह दिखाना चाहते हैं कि जो युगीन बदलाव है उसमें प्रेम और विवाह संबंधों को भी बदलना होगा। मिस मालती कहती भी हैं कि ***पुरुष बनकर रहने से अत्यधिक सुखकर है। जिस दिन मोह से -मित्र बनकर रहना स्त्री" "आसक्त हुए और बंधन में पड़े उसी क्षण हमारा मानवता का क्षेत्र सिकुड़ जाता है।***

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद ने प्रो. मेहता और मालती के जरिए स्त्री-पुरुष संबंधों में हो रहे नए बदलावों पर भी विचार किया है। आगे चलकर प्रेम और विवाह के प्रति जो दृष्टिकोण सामने आता है वह गोदान के चिंतन के अनुरूप ही है।

प्रश्न-2 : 'गोदान' अपने समय के ही नहीं, भविष्य के भारत की भी तस्वीर है। इस कथन की परीक्षा कीजिए।

उत्तर: 'गोदान' 1936 में लिखा गया हिन्दी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास है जो अपने समय के सभी पहलुओं को अपने विस्तृत कलेवर में समेटता ही है भविष्य की ओर संकेत भी करता है। गोदान जिस समय लिखा गया उस समय भारतीय समाज एक दोराहे पर खड़ा था। जहाँ एक और सामंतवाद और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में टूटन की प्रक्रिया जारी थी तो दूसरी ओर औद्योगीकरण और शहरीकरण पर सवार होकर पूंजीवाद दस्तक दे रहा था। गाँव की पीढ़ी का काम की खोज में शहर जाना और नई पूंजीवादी दुनिया से परिचित होना, प्रेमचन्द ने इस ऐतिहासिक संक्रमण का सटीक चित्रण गोदान में किया है और इस रूप में गोदान में युगीन भारत के साथ-साथ भविष्य के भारत का चित्र भी देखा जा सकता है।

1936 के भारत की दुविधाएँ गोदान में समग्र रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। औद्योगीकरण के कारण गाँव के किसान शहरी मजदूर बनने लगे थे। शोषण यहाँ भी था किंतु वहाँ गांव की तुलना में सामाजिक और आर्थिक मुक्ति की संभावना ज्यादा थी। यह पीढ़ी गांव लौटने को तैयार नहीं थी। उपन्यास में इस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व गोबर करता है। गोदान के जमींदार वर्ग (राय साहब) को भी यह अहसास था कि जल्दी ही आजादी मिल जाने पर उनके वर्ग की समाप्ति हो जाने वाली है। उस दौर में सांस्कृतिक परिवर्तन भी गोदान में स्पष्ट झलकते हैं जिन्हें सामंतवादी संस्कृति से पूंजीवादी संस्कृति के संक्रमण के रूप में देखा जा सकता है।

सामन्तवाद जिस मूल्य व्यवस्था को लेकर चलता है उसमें धर्म, बिरादरी, मरजाद संयुक्त परिवार आदि की केन्द्रीय भूमिका होती है और व्यक्ति को उतना महत्त्व नहीं मिलता। इसके विपरीत पूंजीवाद अनिवार्यत: व्यक्तिवाद विचारधारा पर टिका होता है तथा व्यक्ति को समाज से मुक्त करने वाले सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करता है। गोदान में यह संक्रमण बेहद स्पष्ट है। होरी जहाँ धर्म, विरादरी और मरजाद से चिपका हुआ है। वहाँ गोबर के लिए केवल धन महत्त्वपूर्ण है।

गोदान को इन युगीन परिस्थितियों में भविष्य के भारत की तस्वीर भी बेहद साफ देखा जा सकता है जो कुछ प्रसंग में विशेष रूप से मुखर हो उठी है। गोदान में नारी चेतना के बीज स्पष्ट देखे जा सकते हैं जो आज पुष्पित पल्लवित के रहे हैं। गोदान में सिलिया के परिवार में उभरती हुई दलित चेतना आज सर्वत्र व्याप्त है। गोदान में दिखने वाला पूंजीवाद व्यक्तिवाद आज बाजारवादी उपभोक्तावाद तक पहुंच चुका है।

गोदान में लोकतंत्र की भावी वास्तविकताओं व पत्रकारिता के पतन का भी स्पष्ट चित्रण है। ओंकारनाथ का चरित्र केवल उस समय के कुछ पत्रकारों से बल्कि आधुनिक समय के अधिकांश पत्रकारों से भी मेल खाता है। हमारी लोकसभा में अरबपतियों व करोड़पतियों की बढ़ती संख्या में लोकतंत्र के धनतंत्र में बदलने की प्रवृत्ति को देखा जा सकता है जिसका जिक्र मिर्जा खुरशेद तथा मिस मालती के वाक्यों में मिलता है। गोदान में भविष्य के भारत की तस्वीर झलकने का एक बहुत बड़ा कारण प्रेमचंद की वह दूरगामी दृष्टि थी जो किसी प्रवृत्ति के मूल उत्स को पकड़कर भविष्य में उसके विकसित रूप तक पहुंच सकती थी।

कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि 'गोदान' अपने समय के ही नहीं भविष्य के भारत की भी तस्वीर है। यहाँ प्रेमचन्द अपने युग के साथ मौजूद तो है ही उस युग की ओर संकेत भी करते हैं जो आजादी के बाद रूप ग्रहण करने वाला है।

प्रश्न-3 : 'गोदान' में भारतीय कृषक के शोषण के विभिन्न रूपों का उल्लेख हुआ है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने समकालीन यथार्थ को बहुत कलापूर्ण ढंग से कथा साहित्य से जोड़ दिया। उनके पचास वर्षों के अनुभव संसार के भारतीय जीवन के यथार्थ को हम उनके उपन्यासों में प्रतिफलित होते हुए देख सकते हैं। प्रेमचंद ब्रिटिश शोषण के परिणामस्वरूप किसानों की निर्धनता, उनकी दयनीय जीवन स्थिति तथा अमानवीय परिस्थितियों का चित्रण करते हैं। प्रेमाश्रय और गोदान इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

गोदान ग्रामजीवन और संस्कृति को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय उपन्यास है। यह सही है कि यह एक काल विशेष के ग्रामीण समाज का चित्र प्रस्तुत करता है, पर अपनी यथार्थता, व्यापकता और संवेदनात्मक गहराई में यह चित्रण निश्चय ही बेजोड़ है।

प्रेमचंद ने किसानों की आर्थिक दुरावस्था का बहुत बहुत ही प्रामाणिक और मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। तत्कालीन कृषक समाज विदेशी सरकार, जमींदार और महाजन के तिहरे शोषण चक्र में पिस रहा था। प्रेमचंद ने शोषकों के प्रतिनिधि के रूप में लाला पटेश्वरी और दरोगा, रायसाहब और दुलारी सहुआइन, मंगरूसाह और पं. दातादीन को प्रस्तुत किया है। बेलारी गांव के समस्त किसान जिनके दुर्भाग्य की कहानी प्रेमचंद ने कही है, इन शोषकों के शोषण, दमन और अत्याचार के शिकार हैं।

गोदान में होरी की पूरी कहानी उसके दिनों-दिन विपन्न और असहाय होते जाने की कहानी है। उसके जीवन की एक ही महत्वाकांक्षा है, एक गाय लेने की। इस 'महत्वाकांक्षा' की पूर्ति के प्रयास में वह आजीवन संघर्ष करता है, पर उसे सफलता नहीं मिलती। यह महत्वाकांक्षा उसे किसान से मजदूर में परिणत कर देती है। इस अभिलाषा को मन में लिए वह मृत्यु का शिकार होता है।

प्रेमचंद किसानों के शोषण के मूल में उनकी अशिक्षा, धर्मभीरुता, सामंती मूल्यों में विश्वास और संगठन के अभाव को देखते हैं। होरी की जन्मान्तरवाद, कर्मफलवाद, भाग्यवाद, वर्णाश्रम व्यवस्था आदि में भी पूरी आस्था है जिसके फलस्वरूप उसके मन में व्यवस्था के प्रति विद्रोह की चेतना नहीं जगती। कृषि संस्कृति में किसान के लिए मजदूरी करना मर्यादा विरुद्ध है। होरी अपनी खोखली मर्यादा बनाये रखने में भी असफल होता है, लगान चुकाने के लिए वह दो सौ रुपये लेकर अपनी बेटी रूपा का विवाह अधेड़ रामसेवक से कर देता है। यह होरी की सबसे बड़ी पराजय, उसके जीवन की सबसे बड़ी घटना है जिसका वर्णन प्रेमचंद ने बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। इसी प्रकार होरी गाय की तमन्ना लिए ही स्वर्ग सिधार जाता है।

कृषकों की परंपरागत मान्यताओं में एक है विरादरी में बने रहने का मोह। यही मोह होरी को महान संकट में डाल देता है। गोबर की गर्भवती झुनिया को शरण देने के कारण यह सौ रुपये नगद और तीस मन अनाज का डांड़ देता है और बाद में फाकाकशी करता है। कृषि संस्कृति में चर्म और ब्राह्मण का भय भी पारंपरिक मूल्यों में है जिसके कारण किसानों का शोषण होता है। भोला धर्म के नाम पर ही होरी के बैल ले जाता है, होरी पं. दातादीन का कर्ज पचाने की कल्पना ही नहीं कर सकता आदि इस संदर्भ में महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

वैसे, होरी के विपरीत गोबर, जो नयी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है, उन सारे सामंती मूल्यों को नकारता है, जो किसानों के शोषण को सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। इस प्रकार प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन को उसकी समग्रता में प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार, प्रेमचंद ने गोदान में भारतीय किसान के शोषण की करुण कथा उदगार किया है। गोदान किसानी जीवन की विडम्बना और त्रासदी का एक ऐसा लिखित दस्तावेज है जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर विवश किसानों के अंगूठे के निशान देखे जा सकते हैं।

प्रश्न-4 : 'गोदान' अपने युग की प्रतिनिधि रचना है? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : रैल्फ फॉक्स ने 'उपन्यास महाकाव्य के रूप' में शीर्षक निबंध में लिखा है- "उपन्यास विश्व की कल्पना प्रसूत संस्कृति को बुर्जुआ सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण देन है।" इस अर्थ में उन्होंने उपन्यास को नये युग या समाज का महाकाव्य कहा है। इसके बाद उन्होंने टाल्सटाय के 'बार एण्ड पीस' एवं फील्डिंग के 'टॉम जोन्स' की चर्चा गद्यकाव्यात्मक उपन्यास के रूप में की है।

'गोदान' का चित्रफलक काफी फैला हुआ है। शहर और गाँव के विविध पहलुओं के चित्र इसकी महाकाव्यात्मकता को उजागर करते हैं। भारतीय गाँव के चित्र का शायद ही कोई कोना हो जिस पर प्रेमचंद की नजर न गई हो। 'गोदान' में गाँव टूट रहे हैं और शहर आबाद हो रहे हैं, ढहते हुए सामंतवाद के मलबे से महाजनी सभ्यता सिर उठा रही है, प्रेमचंद ने इन सबका चित्र विस्तृत फलक पर खींचा है। उनकी रचनाओं का कैनवस बहुत बड़ा है। गोदान में तो खेत-खलिहान ताल और पुरवा, शोषण-उत्पीड़न, पंचायत-जुर्माना, विवाह-व्याभिचार से लेकर मारपीट एवं गाली-गलौच तक के चित्र हैं- सच्चा और सजीव।

कर्ज की समस्या, जातिविरादरी का डर-, सामाजिक मानमरजाद-, धार्मिक पाखण्ड आदि का जो शोषण चक्र है उससे होरी जैसे किसानों का बचना संभव नहीं है। यही वजह है कि इस ग्रामीण परिवेश में अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद न तो होरी एक सामान्य जीवन जी पाता है और न ही मातादीन जैसे लोग सामाजिक मूल्यों को तोड़कर सिलिया को अपना सकते हैं।

यद्यपि नगरीय जीवन की कथा एक अवांतर कथासी लगती है किन्तु जिन सामंती मूल्यों के विघटन के पश्चात नई व्यवस्था - का जन्म होने वाला है उन स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में नगरीय कथा को ग्रामीण कथा से जोड़कर देखा जा सकता है। वस्तुतः तत्कालीन भारतीय समाज के ऐतिहासिकसामाजिक आधार को समझने के लिए दोनों कथाओं को जोड़कर देखना अनिवार्य हो जाता है।-

गोदान में तत्कालीन जीवन के प्रायः सभी पक्षों का चित्रण हुआ है। इसलिए उसे भारतीय समाज का विश्वकोश कहा जाता है। 'गोदान' के छोटे पात्रों की छोटी तस्वीरों में वैचारिक आवेश अधिक तीव्र है। प्रेमचंद यहाँ लड़ाई की हर भंगिमा को मुहावरे में बोलते हैं। प्रेमचंद की रचनाओं में इतिहास से उनके गहरे सरोकार का परिचय मिलता है।

भाषा, शिल्प और शैली को लेकर भी गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। उसका समानान्तर शिल्प एक अद्वितीय विशेषता है। घटनाएं कार्य-करण सम्बन्ध के फलस्वरूप आती हैं। उनकी शैली किस्सा कहने की एक आमफहम शैली है। उन्होंने शब्द चित्रों, वार्तालापों एवं स्वाभाविक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में अपने चरित्रों को उभारा है। गोदान का गद्य हिन्दी को प्रेमचंद की अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक देन है। इस प्रकार, गोदान अपने युग की प्रतिनिधि रचना है और वह आज भी प्रासंगिक है। वह उपन्यास की शैली में भारतीय जीवन का महाकाव्य है।